P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-10* June- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

साम्प्रदायिकता का वैचारिक आधार

विकास कुमार मिश्रा
शोधार्थी,
जी.बी. पन्त, समाजिक विज्ञान संस्थान, झूसी, यूनिवर्सिटी, प्रयागराज, यू.पी., भारत

सारांश

आक्सफोर्ड डिक्शनरी में *साम्प्रदायिकता* के लिए जो शब्द आता है वह है Communalism इसका अर्थ विस्तारित करते हुए बताया गया है– अ स्ट्रांग सेंस ऑव बिलांगिंग टू अ पार्टीक्युलर, स्पेशियली रिलीजियस, कम्यूनिटी[1]। इस परिभाषा में साम्प्रदायिकता का आशय किसी समुदाय, विशेषकर धार्मिक समुदाय से गहन रूप से प्रतिबद्ध होने के आशय से है। भारतीय उपमहाद्वीप में साम्प्रदायिकता का आशय केवल यही भर नहीं है। उपमहाद्वीप के अलग–अलग क्षेत्रों और स्थान विशेष पर इसका अर्थ परिवर्तित होता रहता है।

मुख्य शब्द : समुदाय, धर्म, संस्कृति।

प्रस्तावना

साम्प्रदायिकता सत्तासीन तबकों के लिए एक राजनीतिक हथियार है। साम्प्रदायिकता के तौर–तरीकों में बहुत बदलाव आया है। साम्प्रदायिकता ने अब पूरा राजनीतिक दर्शन गढ़ लिया है। इसने फासीवाद व तानाशाही को अपना राजनीतिक लक्ष्य बना लिया है। साम्प्रदायिकता जटिल परिघटना है। इसे सिर्फ समसामयिक, सामाजिक और राजनीतिक संदर्भों में ही नहीं समझा जा सकता। इसकी एक ऐतिहासिक मध्यकालीन एवं आधुनिक पृष्ठभूमि है। इसे समूचे तौर पर समझने के लिए समग्र दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है। टुकड़ों–टुकड़ों में इसे नहीं समझा जा सकता। साम्प्रदायिक शक्तियां अपने आजकल के कृत्यों को वैधता प्राप्त करने के लिए जड़ें मध्यकाल में तलाशती है।

साहित्यावलोकन

हमारे देश में फासीवाद सांप्रदायिकता के रूप में सामने आ रहा है। कथित हिंदुत्व का आंदोलन जिस रूप में उभरकर सामने आया है, उसमें वह क्लासिकल अर्थ में अपनी विचारधारा में फासीवादी है, अपने वर्गीय समर्थन में फासीवाद है, अपने तौर–तरीकों में फासीवाद है और अपने कार्यक्रम में फासीवाद है। फासीवाद विचारधारा के सभी घटक यहां मौजूद हैं। ''हिन्दू'' की जबरन यकसां बनायी गयी अवधारणा के अंतर्गत, बहुसंख्यकों को एकजुट करने की कोशिश की जा रही है। इस यकसां बना दिये गये समूह में, अतीत में ऐसे ही यकसां बना दिये गये अल्पसंख्यक समुदाय द्वारा किये गये कथित अन्यायों के खिलाफ, एक शिकायत खड़ी की जा रही है। इस अल्पसंख्यक समुदाय के खिलाफ, सांस्कृतिक श्रेष्ठता की भावना पैदा की जा रही है। *(पटनायक, 1995)*

जातीयता के मामले में संघियों का साफ कहना है कि हिंदुस्तान में राष्ट्र का अर्थ ही हिंदु है। गैर–हिंदु तबकों के लिए यहां कोई स्थान नहीं है।'' मूलगामी विभेद वाली संस्कृतियों और जातियों का मेल हो ही नहीं सकता'' के हिटलरी फार्मूले को वे भारत पर हुबहू लागू करते हैं। उनकी यह साफ राय है कि गैर–हिंदू भारत में रह सकते हैं, लेकिन वे सीमित समय तक तथा बिना किसी नागरिक अधिकार के रहेंगे। गोलवलकर के शब्दों में। *(माहेश्वरी, 1993)*

आज सम्प्रदायवाद वास्तव में क्या ? अकादमिक जगत में इसकी विभिन्न परिभाषाएं गढ़ी गयी हैं। इन परिभाषाओं के अनुसार, सम्प्रदायवाद कहीं तो ''सर्वोपरि, एक विचारधारा'' है, कहीं ''एक मिथ्या चेतना'' है, कहीं ''दुर्लभ साधनों के लिए एक संघर्ष'' और ''नौकरियों के लिए प्रतियोगिता'' है, तो कहीं ''शासक वर्ग की राजनीति का उपकरण'' है। सामान्य रूप में, विलफ्रेड कांदवेल स्मिथ ने इसे ''एक ऐसी विचारधारा'' के रूप में परिभाषित किया है ''जो प्रत्येक धर्म के अनुयायियों के समूह के एक सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक इकाई होने पर, और ऐसे समूहों के बीच भेद पर, यहां तक कि वैर भाव तक पर, बल देती है।'' *(पणिक्कर, 2009)*

भारत में धर्म और जाति अस्मिता निर्माण के सबसे प्रमुख तत्व रहे हैं। औपनिवेशिक शासन ने इसे और भी अश्मीभूत किया। समकालीन भारत में जब भी धर्म आधारित पहचान की चर्चा की जाती है तो साम्प्रदायिकता उसमें सबसे बड़ा मुद्दा होती है। यहीं पर स्पष्ट कर देना चाहिए कि साम्प्रदायिकता एक

औपनिवेशिक निर्मिति है जबकि धर्म विभिन्न समुदायों या संस्कृतियों के दैनिक आचार विचार की एक नैतिक व्यवस्था है। औपनिवेशिक शासन ने भारतीय उपमहाद्वीप के धर्मो को एक दूसरे के हित को समाप्त कर अपने हित को आगे बढ़ाने वाले समुदायों के रूप में एक दूसरे के समक्ष खड़ा कर दिया। 1857 के विद्रोह के बाद इस प्रक्रिया को औपनिवेशिक शासन ने सायास बढ़ाया फलस्वरूप उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से साम्प्रदायिक दंगों की एक श्रृंखला वर्तमान काल तक चली आयी है। देश किसका है और इसका स्वरूप क्या होगा? क्या यह धर्म आधारित होगा?इसका नाम क्या होगा ? इस बात को लेकर छंगों हुए। हिन्दी राष्ट्रभाषा होगी कि उर्दू या फारसी प्रचलन में होगी इसको लेकर दंगे हुए। संविधान सभा में एक समुदाय विशेष की बड़ी संख्या को भय में बदला गया फिर 1946 में भीषण कत्ले–आम किया गया। भारत और पाकिस्तान बनने के बाद देश में दंगे हुए । देश की राजनीति और शक्ति पर एकाधिकार और देश के स्वरूप को अपनी सुविधानुसार ढालने के लिए 1992 के बाद तो दंगों की एक नयी श्रृंखला ही चल पड़ी। दंगे की आग रह–रह कर भड़क उठती है। इस दौरान कुछ जाने–पहचाने तरीके प्रयोग में आते हैं तो कुछ सर्वथा नये तरीके और प्रतीक उभरते हैं।

आजादी की लड़ाई के दौरान, संविधान सभा की बहसों और संविधान के लागू होने के बाद भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र बनाये रखना एक बड़ी चुनौती थी। 1940 के दशक की दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो सके, इसलिए संविधान में भारत को एक धर्म निरपेक्ष, लोकतांत्रिक एवं समाजवादी देश बनाने की वकालत की गयी जिसमें सभी धर्मो, सम्प्रदायों एवं विभिन्न संस्कृतियों को मानने वाले एक साथ सौहार्द पूर्ण ढंग से रह सकें तथा राष्ट्र की मूल आत्मा से अपने को जुड़ा हुआ महसूस कर सकें।

इतिहासकार इरफान हबीब ने बताया है कि भारत में इतिहासकारों का प्रमुख रूप से दो समूह रहा है। एक में प्रमुख इतिहासकार आर.सी. मजूमदार थे जिन्होंने मध्य काल को मुगल भारत तथा प्राचीन काल को हिन्दू भारत कहा है। उनके अनुसार मुगल शासक क्रूर प्रवृत्ति के थे, इनके शासन काल में हिन्दुओं को उत्पीड़ित किया गया ये हमेशा से विदेशी थे। दूसरे समूह के प्रतिनिधि प्रमुख रूप से डी0डी0 कौशाम्बी थे। जिन्होंने मजूमदार से विपरीत बातें कहीं है। औपनिवेशिक भारत में जो इतिहास लेखन हुआ उसने जाने अनजाने साम्प्रदायिकता के प्रसार में अपनी भूमिका निभाई। आरम्भिक भारत को हिन्दू भारत तथा मध्यकालीन भारत को मुस्लिम भारत कहा जाता रहा। 1950 के पहले के राष्ट्रवादी इतिहास लेखन ने तुर्कों और मुगलों में खोज खोजकर बुराइयाँ दिखाईं। इसी प्रकार कुछ औपनिवेशिक प्रशासक–सह इतिहासकारों ने इस वैमनस्य को आगे बढ़ाया 1909 के मार्ले–मिंटो सुधारों ने साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व को एक वास्तविकता में बदल दिया। सर्वात्रिक वयस्क मताधिकार तो औपनिवेशिक शासन दे नहीं सकता था लेकिन वह अल्पसंख्यक होने के भय और बहुसंख्यक होने के बोध ने भी प्रतिनिधिमूलक राष्ट्र के निर्माण में चुनौतियाँ पेश कीं[2]। साम्प्रदायिकता का आधार ही यह धारणा है कि भारतीय समाज कई ऐसे संप्रदायों में बंटा हुआ है जिनके हित न सिर्फ अलग है बल्कि एक–दूसरे के विरोधी भी है। साम्प्रदायिकता के जन्म के पीछे का विश्वास यह भी है कि राजनीतिक और आर्थिक से लेकर सामाजिक और सांस्कृतिक इरादों के लिए लोगों को सिर्फ धर्म की रस्सी से ही बांधकर किसी सामान्य लक्ष्य की ओर ले जाया जा सकता है। दूसरे शब्दों में अलग–अलग समुदायों और समूहों के हिन्दू, मुस्लिम, सिख और इसाई सिर्फ धार्मिक ही नहीं बल्कि धर्म से परे मामलों में भी एक निश्चित समूह की तरह आचरण करेंगे क्योंकि उनका धर्म एक है। धर्म से परे इन मामलों राजनीति भी है(चन्द्र 2004)।

आजादी के बाद भारत की सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों में परिवर्तन हुआ । देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू देश में एक धर्म निरपेक्ष वादी संस्कृति के निर्माण के बड़े पक्षधर थे। उन्होंने साम्प्रदायिकता का मुखरता से विरोध किया। इस सन्दर्भ में उन्होनें 1954 में ही घोषित किया था, ''मैं भारत में हर चुनाव हारने का तैयार हूँ मगर साम्प्रदायिकता और जातिवाद को कोई कोना नहीं मिलने दूंगा।'' नेहरू समेत अनेक ऐसे उदारवादी व्यक्तित्वों की एक परम्परा ही रही है जो कि साम्प्रदायिकता के खिलाफ एवं धर्म निरपेक्ष संस्कृति के निर्माण की हमेशा वकालत करती रही है। एक दूसरे छोर पर साम्प्रदायिक राजनीति को सक्रिय करने के प्रयास भी सदैव होते रहे हैं(चन्द्र 2004)।

1946 से लेकर 2012 तक साम्प्रदायिक दंगों की एक अबाध श्रृंखला चली आयी है। उत्तर प्रदेश के विभिन्न भागों में दंगों की आवृत्ति होती रही है। 1987 में मेरठ के मलियाना में दंगे हुए। 1989 में गोण्डा जिले के कर्नलगंज कस्बे में दंगे हुए जिसमें एक स्थानीय नेता की भूमिका की बात की जाती रही है। यहाँ दुर्गा पूजा और ताजिये के विवाद के बीच दंगे हुए। मऊ जिला, जो कि साम्प्रदायिक रूप से काफी संवेदनशील जिला माना जाता है। जहाँ पर किसानों एवं सिल्क साड़ी बनाने वाले जुलाहों की काफी आबादी है। जिसमें 80 प्रतिशत हिन्दु एवं 20 प्रतिशत मुस्लिम है। इस जिले में 1969, 1983 1984, 1988, 1990 और 2000 में साम्प्रदायिक दंगे हुए इन दंगे के पीछे कई आर्थिक कारण भी थे। कई गरीब जुलाहे जो हैण्डलूम का काम करते थे वे बड़े व्यापारी और ट्रेडर्स बन गए, जिसके फलस्वरूप वह अब ज्यादा लाभ कमाने लगा था। दो सम्प्रदायों के बीच तात्कालिक तनाव का एक मुख्य कारण था क्योंकि उनके आर्थिक हित आपस में टकरा रहे थे[3]।

6 दिसम्बर 1992 को बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद पूरे देश में साम्प्रदायिक तनाव देखने को मिला। 1989 से स्पष्ट रूप से दृश्य पिछले तीन वर्षों की घटनाओं ने यकायक इतना भीषण रूप धारण कर लिया। उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जिले के अयोध्या क्षेत्र में स्थित बाबरी मस्जिद को लाखों कारसेवकों ने ढहा दिया। भारतीय उपमहाद्वीप में इसकी आँच बांग्लादेश तक पहुँची। बाबरी मस्जिद के विध्वंस ने देश के मस्तिष्क पर एक स्थायी छाप छोड़ी और इस खतरे को रेखांकित किया कि प्रजातांत्रिक ढंग से चुनी गयी सरकारें भी जानबूझकर देश के धर्मनिरपेक्ष चरित्र को दाँव पर लगा सकती हैं और

मन्दिर बनाने के नाम पर चुनाव घोषणा–पत्र तक जारी किये जा सकते हैं। इसे एक प्रमुख चुनावी मुद्दा बनाया जा सकता है। पहले तो इसमें शामिल समूहों ने इस पर खेद व्यक्त किया कि बाबरी मस्जिद का गिरना एक खेदजनक घटना है और कुछ ही दिनों में देश के विभिन्न भागों में साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण देखा गया जिसे वोट में बदला जा सकता था तो इस घटना को बहुसंख्यक हिन्दू वीरत्व–व्यंजना में बदल दिया गया। इसके बाद इस प्रकार की जो घटनाएँ हुईं उनमें भी साम्प्रदायिकता के उभार के साथ इस या उस समूह के द्वारा शिकारी या शिकार लोगों को वोट के रूप में देखा गया(ग्रेफ 2013)।

कहा गया है कि *आजाद भारत में हिन्दुओं और मुसलमानों के कैलेण्डर आपस में टकरा गये हैं*। वे प्रायः आपस में टकरा जाते हैं जब दुर्गा–पूजा से मुस्लिमों की ताजिया के जुलूस टकरा जाते हैं। स्थानीय स्तर की शत्रुताएँ और बदमाशियाँ कभी कभी घटनाओं को साम्प्रदायिक रूप से ध्रुवीकृत कर देती हैं। वर्ष 2012 में फैजाबाद में ऐसा हुआ कि एक मन्दिर से प्राचीन मूर्तियाँ चोरी हो गयीं। इसका आरोप मुसलमानों पर लगाया गया। इसके बाद दुर्गा पूजा का पर्व आया जिसमें मूर्तियों के ऊपर पत्थर फेंके गये। यह घटनाएँ फैजाबाद शहर में हुईं। इसके बाद ग्रामीण क्षेत्रों में भी हिंसा और साम्प्रदायिक वैमनस्य फैला और दोनों समुदायों के दो लोग मारे गये । इन घटनाओं में पहले शहर फिर कस्बे और इसके बाद गाँव के गाँव शामिल हो गये। लगभग दो महीने तक स्थितियाँ शांत नहीं हो पायीं। प्रेस काउंसिल ऑफ इण्डिया के रिपोर्ट में मुर्तियों के चोरी के बाद बी0जे0पी0 के नेताओं द्वारा भड़काउ भाषण करने और लोगों को उकसाने की बात सामने आयी है मुस्लिमों पर चोरी के आरोप के अफ़वाह की बात भी सामने आयी है। *(पी.सी.आई. रिपोर्ट फरवरी, 2013)*

आरम्भिक अवस्था में सांप्रदायिक चेतना इस तरह कार्य करती है कि वह किसी खास घटना के स्तर पर साम्प्रदायिक हिंसा का रूप ले लेती है। साम्प्रदायिक हिंसा आमतौर पर उस समय उभरती है जब पहले से चली आ रही साम्प्रदायिक चिन्तन की तीव्रता एक खास स्तर तक पहुँच जाती है और साम्प्रदायिक भय, सन्देह और नफरत में वृद्धि के कारण वातावरण दूषित हो जाता है। इसलिए साम्प्रदायिक चेतना बिना हिंसा के भी बनी रह सकती है परन्तु साम्प्रदायिक हिंसा बिना साम्प्रदायिक चेतना या विचारधारा के अस्तित्व में नहीं रह सकती। (चन्द्र, 2000)

इस लेख के लिए निम्न उद्देश्यों, प्राक्कल्पनाओं और प्रश्नों को लेकर लिखने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत इस शोध प्रस्ताव में निम्नलिखित उद्देश्य के साथ अध्ययन किया जाएगा–

1. यह देखना कि साम्प्रदायिकता के नाम पर लोगों को संगठित करने वाले तत्व कौन–कौन से है?
2. यह अध्ययन करना कि आर्थिक हितों की टकराहटों की वजह से साम्प्रदायिक तनाव क्यों और कैसे फैलता है?

शोध परिकल्पना

1. साम्प्रदायिक चेतना के प्रसार का केन्द्र कस्बे है जहां से ग्रामीण क्षेत्रों की ओर यह सम्प्रेषित हो रही है।
2. ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक हितों के टकराव ने साम्प्रदायिकता को बढ़ावा दिया है।

शोध प्रश्न

1. ग्रामीण क्षेत्रों में साम्प्रदायिक चेतना का प्रसार किस प्रकार से होता है ?
2. ग्रामीण क्षेत्रों में, दैनिक जीवन में लोगों के मन में साम्प्रदायिक भावना कैसे प्रतीत होती है?

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में चुने गये शहर, कस्बों और ग्रामीण क्षेत्रों को शामिल किया गया है। इस अध्ययन में प्रस्तुत शीर्षक से सम्बन्धित पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, सरकारी दस्तावेजों, सरकारी अध्ययनों, सरकारी सर्वेक्षणों से प्राप्त आकड़ों, शोधप्रबन्धों का अध्ययन, विश्लेषण एवं मूल्यांकन किया जाएगा। शोधार्थी फैजाबाद जिले के अन्दर तीन ऐसे गाँवों का चुनाव करेगा जिसमें–

1. ऐसा गाँव जहाँ हिन्दू बाहुल्य आबादी हो।
2. ऐसा गाँव जहाँ मुस्लिम बाहुल्य आबादी हो।
3. ऐसा गाँव जहाँ पर साम्प्रदायिक घटना हो चुकी हो, वहाँ पर कैसा माहौल है ?

इसके अतिरिक्त इस अध्ययन में भागीदारी आधारित पर्यवेक्षण का प्रयोग किया जाएगा, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों एवं छोटे कस्बों में छोटे–छोटे समूहों के मध्य जाकर प्रश्नावलियों व साक्षात्कार के माध्यम से सूचनाओं को प्राप्त करके, उनकी व्याख्या एवं विश्लेषण किया जाएगा।

साम्प्रदायिकता एक चेतना के तौर पर लोगों के अन्दर कैसे फैलती है। क्या यह स्वतः स्फूर्त होती है? इसको कोई समूह या विचारधारा प्रसारित करती है या स्थानीय परिस्थितियाँ उत्तरदायी होती हैं। वह कौन सा बिंदु होता है जब स्थानीय मुद्दों को प्रादेशिक या राष्ट्रीय स्तर पर एक साम्प्रदायिक प्रश्न बना दिया जाता है। अभी तक इसे एक शहरी प्रश्न माना जाता रहा है और ग्रामीण क्षेत्रों को एक प्रकार से साम्प्रदायिकता से अछूता माना जाता रहा है लेकिन जैसाकि हाल में घटी घटनाएँ दिखाती हैं, साम्प्रदायिक चेतना ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत तेजी से फैल रही है। इसकी प्रक्रिया और प्रभाव को जानने समझने की जरूरत है।

निष्कर्ष

अभी तक साम्प्रदायिकता के ऐतिहासक पक्ष पर बात की गयी है और दंगों के होने और उसके भौगोलिक प्रसार पर बात की गयी है। यह चर्चा समस्या को या तो ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखती है या उसकी तात्कालिकता में। जबकि लोगों की चेतना से साम्प्रदायिकता की समस्या उपजती है। यह देखने की कोशिशें नहीं की गयी है कि एक धर्म के अनुयायी दूसरे धर्म के अनुयायियों को अपना स्वाभाविक शत्रु क्यों मान लेते हैं ? चेतना के स्तर पर लोग साम्प्रदायिक क्यों हो जाते हैं और यह चेतना ग्रामीण समाजों में किस प्रकार प्रसार पाती है? जो समुदाय साथ रहते दिखते हैं, उनके बीच में साम्प्रदायिक तनाव कैसे बढ़ता है और एक समय के बाद किस प्रकार व्यापक रूप धारण कर लेता है? जिसे दंगा कहा जाता है, उसकी

आधार–सामग्री का निर्माण किस प्रकार होता है? इस प्रक्रिया में राजनीति क्या भूमिका निभाती है? इस प्रकार साम्प्रदायिकता के वैचारिकी एवं उसके प्रभाव का बहुत ही सूक्ष्मता से देखने व परखने का प्रयास किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *चन्द्र विपिन, साम्प्रदायिकताः एक परिचय, 2004 अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा0 लि0) नई दिल्ली।*
2. *नेहरू, जवाहरलाल, डिस्कवरी ऑव इण्डिया, 1986, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली,*
3. *राय, वी0एन0, साम्प्रदायिक दंगे एवं भारतीय पुलिस, 2000, राधाकृष्ण प्रकाशन , दिल्ली।*
4. *साम्प्रदायिक समस्याः कानपुर दंगा जाँच समिति की रिपोर्ट, 2008, अनुवाद– दिवाकर, नेशनल बुक ट्रस्टः नयी दिल्ली, ।*
5. *ज्ञानेन्द्र पाण्डेय ओमनीबस, 2008, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नयी दिल्ली में संग्रहीत।*
6. *चन्द्र विपिन, (2000) आधुनिक भारत में विचारधारा और राजनीति, अनामिका पब्लिसर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा0लिमिटेड) नई दिल्ली।*
7. *हबीब इरफान, (2005) इतिहास और विचारधारा, ग्रन्थ शिल्पी इण्डिया, (प्रा0लिमिटेड) नई दिल्ली।*
8. *Ahamd Aijaz, on Communalism & Globlization offensives of the For Right(three essays collective)s.*
9. *Bhagwan manu, EPW 13 Sep 2008, Indian National Congress in late colonial and early post colonial India*
10. *Bayly, C.A. (1985) : "The Pre-Histroy of 'Communalism'? Religious Conflict in India, 1700-1860" Modern Asian Studies.*
11. *(2003) : The Production of Hindu-Muslim Violence in Contemporary India (Seattle : University of Washington Press).*
12. *Bhargava, Rajeev (1998) : Secularism and Its Critics (New Delhi : Oxford University Press).*
13. *Brass, P (1997) : Theft of an Idol: Text and context in the Representation of Collective Violence (Princeton : Princeton University Press).*
14. *Katju, Justice Markandey PCI Report 8 February 2013, on Faizabad Communal Riot was preplanned.*
15. *Kothari, Rajni (2002): "Culture of Communalism in Gujarat", Economic & political Weekly.*
16. *Khilnani, Sunil (1997) : The Idea of India (Delhi : Penguin).*
17. *Madan, TN. (1987) : "Secularism in Its Place", Journal of Asian Studies.*
18. *Mayaram, Shail (1997) : Resisting Regimes : Myth, Memory and the Shaping of A Muslim Identity (New Delhi : Oxford University Press).*
19. *Narayan Badri, 2009, Fascinating Hindutva Saffron Politics and Dalit Mobilisation, SAGE Publication, India Pvt. Ltd. New Delhi.*
20. *Nandy, Asish (1995) : "An Anti-Secularist Manifesto", India International Centre Quaraterly, Spring.*
21. *Pannikar, KN (1991) : Communalism in India : History, Politics and Culture (New Delhi : Manohar).*
22. *(1993) : "Culture and Communalism", Social Scientist.*
23. *PUCL, August 2003, Manipulating peoples minds*
24. *PUCL, March 2004, Cultural Policing by Bajrang Dal and the Rajasthan Police.*
25. *Sahay, Anand K. The Republic Besmirched 6 December 1992, Safdar Hashmi Memorial trust, New Delhi.*
26. *Saxena, N.C. Communal Riots in Post Independence India (1984) Engineer, Asghar Ali, ed. (1984a) : Communal Riots in Post-Independent India (Delhi : Sangam Publications).*
27. *Srivastava Kavita, PUCL, April 2003, Communalising Rajasthan.*
28. *Vanaik, Achin (1997) : The furies of Indian Communalism: Religion, Modernity and Secularization (London :*

पाद टिप्पणी

1. *आक्सफोर्ड एडवांसलर्नर्स डिक्शनरी, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटीप्रेस, आक्सफोर्ड, पृ 301*
2. *History and Interpretation Communalism and problems of Histeriography in India, http://www.sacw.net/india-history/ihabib accessed on 6.08.2013*
3. *K samu, communal Riots 2005 Human Right Documentation, Indian Social Institute, New Delhi*